सरकारी पॉलिसी से मीठे होंगे शुगर कंपनियों के स्टॉक्स

[सूरज साउकर *ईटीआईजी*]

उत्तर प्रदेश में प्लांट रखने वाली शुगर कंपनियों के स्टॉक्स पिछले एक हफ्ते में चढ़े हैं। इस सीजन में उत्तर प्रदेश में गन्ने का खरीद मूल्य कम होने की उम्मीद में इनके स्टॉक्स में तेजी आई है। इस बार प्रदेश में गन्ने की अच्छी फसल की वजह से यह उम्मीद पैदा हुई है कि भले ही शॉर्ट-टर्म के लिए सप्लाई की दिक्कतों के चलते गन्ने के दाम ऊपर क्यों न बने रहें, लेकिन ये ज्यादा वक्त तक इन लेवल्स पर टिक नहीं पाएंगे।

चीनी की कीमतों के लगातार फ्लैट बने रहने और गन्ने के स्टेट एडमिनिस्टर्ड प्राइस (एसएपी) में हर साल बढ़ोतरी की वजह से पिछले कुछ क्वॉर्टर्स से शुगर कंपनियों को घाटा उठाना पड़ रहा है। गुजरे दो साल में गन्ने का एसएपी 35 फीसदी बढ़ा है, लेकिन चीनी की कीमतें महज 14 फीसदी ही चढ़ी हैं। यूपी बेस्ड शुगर कंपनियों को इस वजह से नुकसान उठाना पड़ रहा है।

ईटीआईजी के अनुमानों के मुताबिक, शुगर की कीमतें कम से कम 3 रुपए प्रति किलो बढ़नी चाहिए, तभी इनको ब्रेक-ईवेन मिल पाएगा। हालांकि, इस सीजन में सरप्लस प्रोडक्शन को देखते हुए चीनी की कीमतों में इस तेजी की उम्मीद दिखाई नहीं दे रही है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन के मुताबिक, मौजूदा सीजन में देश का शुगर प्रोडक्शन करीब 2.5 करोड़ टन रहने की उम्मीद है जबकि देश में इसकी खपत करीब 2.3 करोड़ टन ही है। इस तरह से मौजूदा सीजन ऐसा चौथा लगातार सीजन होगा जबकि देश में सरप्लस शुगर का प्रोडक्शन होगा। इसके अलावा, इंडिया के पास पिछले सीजन का करीब 90 लाख टन का क्लोजिंग स्टॉक भी है। मुश्किल अंतरराष्ट्रीय मोर्चे पर भी है। शुगर का इंटरनेशनल प्राइस भी लोअर लेवल पर चल रहा है। ऐसे में इसका एक्सपोर्ट करना भी कंपनियों के लिए मुनाफे का सौदा नहीं रहा है। ब्राजील में भी इस सीजन में ज्यादा प्रोडक्शन हुआ है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा शुगर का प्रोडक्शन करता है। ऐसे में शुगर के इंटरनेशनल मार्केट में दाम नीचे ही रहने की आशंका बनी हुई है।

हालांकि, नियर टर्म में कुछ राहत मिलने की उम्मीद दिखाई दे रही है। यूपी में मौजूद कई मिलों ने अभी तक गन्ने की पेराई शुरू नहीं की है। इसकी वजह से शुगर की कीमतें कुछ महीनों के लिए ऊपर जा सकती हैं। हालांकि, हो सकता है कि यह ट्रेंड ज्यादा वक्त तक न चले। इसके अलावा, यूपी सरकार के गन्ने के दाम शुगर की कीमतों के साथ लिंक करने की मंशा भी इस सेक्टर को फिर से खड़ा करने में मददगार साबित हो सकती है।

प्रधानमंत्री की अपॉइंट की गई रंगराजन कमेटी ने पिछले साल सिफारिश की थी कि मिलों को अपने रेवेन्यू का 70 से 75 फीसदी हिस्सा किसानों के साथ शेयर करना चाहिए। अगर यह सिफारिश लागू होती है तो इससे शुगर कंपनियों के मुनाफे में होने वाले उतार-चढ़ाव को कम करने में मदद मिल सकती है।

एक हफ्ते में चढ़े शेयर

- उत्तर प्रदेश में कामकाज कर रही शुगर कंपनियों के स्टॉक्स पिछले एक हफ्ते में चढ़े हैं। इस सीजन में प्रदेश में गन्ने का खरीद मूल्य कम होने की उम्मीद में इनके स्टॉक्स बढ़े हैं
- गुजरे दो साल में गन्ने का एसएपी 35 फीसदी बढ़ा है, लेकिन चीनी की कीमतें महज 14 फीसदी ही चढ़ी हैं। यूपी की शुगर कंपनियों को इस वजह से नुकसान उठाना पड़ रहा है

Economic Times

28/11/13